Mahila College Dalmianagar
Department of History
B.A III (Hons)

Topic :- बाघरा का युद्ध

Dr. Anu Kumari
Date :- 22/02/2021

⇒ 1526 ई० में पानीपत की पहली लड़ाई में सुल्तान इब्राहिम लोदी की मृत्यु के बाद उसका भाई महमूद लोदी दिल्ली सल्तनत का वैध उत्तराधिकारी बना। 1527 ई० में खानवा का युद्ध हुआ, जिसमें पराजित होने के बाद महमूद लोदी की पकड़ उसके शासन - प्रशासन में भी ढीली पड़ रही थी। वहीं दूसरी ओर बाबर दिल्ली में अपनी सत्ता स्थापित करने की जद्दोजहद में लगा हुआ था। 6 May 1529 ई० को बाघरा का युद्ध मुहम्मद लोदी और बाबर के बीच हुआ, यह युद्ध घाघरा नदी पर लड़ा गया इसी कारण से इसे घाघरा का युद्ध कहा गया। इस युद्ध में बंगाल के शासक नुसरत शाह ने मुहम्मद लोदी की मदद की। 1527 ई० में खानवा की लड़ाई में महमूद लोदी को मिली हार और युद्धभूमि से भागने के बाद से उसकी सत्ता पर संकट मंडराने लगा था। जिसके लिए महमूद लोदी को मिली हार और युद्धभूमि से भागने के बाद से उसकी सत्ता पर संकट

Scanned with CamScanner

मड़राने लगा था। जिसके लिए महमूद लोदी का घाघरा का युद्ध जितना आवश्यक था इस युद्ध के लिए लोदी ने अपने अफगान रिश्तेदारों से सहायता का अनुरोध किया।

सुल्तान महमूद शाह लोहानी के बाद बिहार के पठान शासक की मृत्यु के बाद उनके नाबालिग बेटे जलाल उद्-दीन लोहानी को शासक के रूप में ताज पहनाया गया। तो वहीं दूसरी ओर लोहानी सरदारों की कलह ने उन्हें बाबर के निकट आने वाले सैनिकों से विचलित कर दिया, जिससे युवा राजकुमार को पास के बंगाल की सल्तनत में शरण लेने के लिए मजबूर होना पड़ा। राज्य के पुनःपतन को रोकने के लिए जौनपुर के अफगानों ने महमूद लोदी से बिहार और जौनपुर की गद्दी पर कब्जा करने के लिए कहा। जिसमें वह बिना किसी विरोध के बिहार के अधिकांश हिस्से पर कब्जा करने में सफल रहा इसी बीच जौनपुर के सुल्तान जुनैद बिरला बाबर के साथ जुड़ गए। इस प्रकार बाबर के पास लगभग २०,००० सैनिकों का एक बड़ा लश्कर था। बाबर के विशाल लश्कर, बेहतर युद्ध कौशल और शानदार रणनीति के चलते इस युद्ध के परिणाम बाबर और शानदार रणनीति के चलते इस युद्ध के

के परिणाम बाबर और उसकी सेना के पक्ष में रहे। बाबर ने घाघरा का युद्ध जीत कर दिल्ली सल्तनत पर अपने मुगलिया साम्राज्य की सत्ता प्रथम की, इस युद्ध को मुगल साम्राज्य के लिए हुए अहम युद्धों के रूप में देखा जाता है।

* घाघरा युद्ध के परिणाम

घाघरा का युद्ध एक भीषण युद्ध के रूप में देखा जाता है वहीं घाघरा के युद्ध में बाबर की सेना ने अपने रण कौशल और बाबर के नेतृत्व ने विजय का स्वाद चखा। इस युद्ध से दिल्ली सल्तनत पर बाबर का कब्जा हुआ और मुगल वंश की स्थापना हुई। घाघरा का युद्ध महमूद लोदी के लिए एक शर्मनाक हार का सबक बनकर रह गया। इसके परिणाम भयावह ही रहे हैं। भारत एक ऐसा राष्ट्र है जिसने अपने ऊपर क्रूरता से भरे अनेकों आक्रमण देखे अनेकों नरसंहार और रक्तपात की पीड़ाओं को सहकर भी भारत ने अपनी ममता से मानवता का संरक्षण किया। इतिहास पर प्रकाश डालें तो भारत में कई युद्ध मातृभूमि की रक्षा के लिए लड़े गए, तो वहीं कई युद्ध विस्तारवाद की नीति से लड़े गए।

Scanned with CamScanner